शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2013

# गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित कबीर की वाणी में समाज सुधार की भावना

डॉ शीतल राठौर (शोधार्थी)
हिंदी विभाग
विक्रम विश्वविद्यालय
उज्जैन, भारत

शोध संक्षेप

*गुरु ग्रन्थ साहिब विश्व का एक मात्र ऐसा धर्म ग्रन्थ है जिसमें 36 वानिकारों की वाणियाँ संगृहीत हैं, जिसमें 6 गुरुओं, १५ संतों, 11 भक्तों एवं 4 अन्य की वाणी संगृहीत है। गुरु ग्रन्थ साहिब में 15 संतों के कुल 778 पद हैं। इन संतों को यदि वर्णों की दृष्टी से विभाजन किया जाये तो देखने में आता है जयदेव, रामानंद, परमानन्द और सूरदास ब्राह्मण थे। पीपा क्षत्रिय थे, त्रिलोचन वैश्य थे, शेख फरीद, कबीर और भीखन मुसलमान थे, शेष नामदेव, रविदास, सदना, सैन, धन्ना, बेणी शूद्र जातियों के थे। गुरु अर्जन देवजी ने जातिगत भेदभाव के इन 15 संतों की वाणियों को गुरु ग्रन्थ साहिब में संगृहीत किया। इनमें सबसे अधिक पद कबीर (538 ) के हैं।*

## कबीर की वाणी में समाज सुधार की भावना

गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित कबीर की वाणी में समाज सुधार की भावना स्पष्ट परिलक्षित होती है। उनका मुख्य उद्देश्य सामाजिक कुरीतियों एवं दुरावस्था के प्रति असंतोष अभिव्यक्त करना था। कबीर ने सर्वप्रथम धार्मिक आडम्बरों व रूढियो पर कडा प्रहार करते हुए उनका विरोध किया। उनकी वाणी में समाज सुधार के प्रति गहरी संवेदना, परोपकार की भावना, प्रेम, संता, सहानुभूति, सहृदयता, स्वाभिमान की प्रतिष्ठा, त्याग, दया, क्षमाशीलता, दानशीलता, साधु संगति तथा अहिंसा है। संक्षिप में कहा जा सकता है कि मानवतावाद ही भक्त कबीर के काव्य की आधारभूमि है। उनका उद्देश्य मानव को मानवता का पाठ सिखाना था। वे एक समाज सुधारक अवश्य थे किन्तु किसी धर्म को सुधारना न तो उनका लक्ष्य था और न ही उद्देश्य। वे तो मनुष्य मात्र को सुधारना चाहते थे। चाहे वह हिन्दू हो, चाहे मुसलमान, चाहे होगी और पंडित हो अथवा काजी एवं मुल्ला। अत: कबीर की संपूर्ण वाणी में मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट परिलक्षित होता है। इस सन्दर्भ में डॉ वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते है "भक्त कबीर के उपदेशों की मौलिकता यह थी कि उन्होंने अपने समय के हिन्दुओं और मुसलामानों का ध्यान ऐसे धर्म की और आकृष्ट किया जो सांप्रदायिक सीमा से परे साभौंम पथ का था, ऐसा मार्ग जिस पर दोनों सम्प्रदायों के लोग एक साथ चल सकते थे। भक्त कबीर ने ऐसे भविष्य की कल्पना की थी, जो सभी प्रकार की विषमताओं से परे हो। उन्होंने ऐसे धर्म का प्रचार किया, जिसका आधार विश्वास और व्यक्तिगत अनुभव था। उन्होंने नि:संकोच भाव से सभी प्रकार के मताग्रहों का विरोध किया, क्योंकि उनकी आत्मा साम्प्रदायिक

संघर्षों के औपचारिक धार्मिक मान्यताओं को लेकर उत्पन्न विवादों से दुखी थी। 1

कबीर मध्य युग में ऐसे संत के रूप में सामने आये, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानवता के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उनकी वाणी में बाह्याडम्बरों, ऊँच -नीच, जात-पात आदि का सर्वाधिक विरोध दिखाई देता है। कबीर ने इन काजी, मुल्ला और पंडितों को भी फटकार लगाई है और जनसाधारण को इनसे दूर रहने की सलाह दी। कबीर ने माना कि जब ईश्वर की दृष्टि मेनन ऊँच -नीच, जाती-पाती, अमीर-गरीब का कोइ अंतर नहीं है तो मनुष्य इन व्यर्थ के भेद-भाव में क्यों पडा है ? मनुष्य अज्ञानता के कारण ऊँच -नीच, जात-पात के भेद-भाव में पडा रहता है, जबकि प्रभु की शरण में जाने पर ऊँच -नीच, जात-पात के भेदभाव मिट जाते हैं। उन्होंने समाज में जो भी घटित होते देखा, उसे अनुभोती के आधार पर अभिव्यक्त कर दिया।

कबीर जन्म, जाति और कर्म से सामान्य मानव थे, इसीलिये उनके माध्यम से मानव धर्म का प्रसार हुआ। उनके कर्म और धर्म में एकरूपता थी और कथनी और करनी में साम्य था। उन्होंने सर्वाधिक बल हिन्दू-मुस्लिम एकता पर दिया। उस युग में हिन्दू और मुसलमाओं को एक साहस की बात थी। कबीर ने वह साहस दिखया। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों को एक ही ईश्वर की संतान माना। वे कहते हैं कि वह अदृष्ट अल्लाह सभी दिओन में बसता है, तू इस बात को मन में जान ले। कबीर पुकार-पुकार कर यह कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दोनों में वह एक ही प्रभु अथवा अल्लाह बसता है -

अलहु गैबू सगल घाट भीतरि हिरदै लहू बिचारी

हिन्दू तुरक दुहूँ महि एकै कहै कबीर पुकारी 2

मध्ययुग के लोग जब तीर्थ, व्रत, स्नान, बाह्य आडम्बरों में अत्यधिक विश्वास करने लगे थे तब कबीर ने इन बाह्य आडम्बरों का तर्कपूर्ण खंडन करते हुए कहा यदि अंतर्मन में मेल हो और यदि व्यक्ति तीर्थ स्नान करता फिर रहा है तो समझ लो उसे पता ही नहीं है कि वैकुण्ठ क्या है और खान है ? दिखावे से लोगों को संतुष्ट करने से क्या होगा ? प्रभु इतना बच्चा नहीं है कि तुम्हारे इस प्रपंच से प्रसन्न हो जाएगा। उनका मानना था कि केवल प्रभु की ही पूजा करना चाहिए क्योंकि वही सबसे बड़ा देवता है। और सच्चा स्नान वास्तव में गुरु की स सेवा में है अर्थात गुरु के उपदेश के अनुसार आचरण करना है। जल में स्नान करके यदि परमगति प्राप्त होती तो मेंढक तो रोज ही स्नान करता है -

अंतरी मैलु जे तीरथ नावै तिसु बैकुंठ न जानां

लोक पतीने कछू न होवै नाही रामू अयाना 3

जो मनुष्य तीर्थों में ज्यादा विश्वास करते थे, उन्हें लक्ष्य करके कबीर ने कहा - कठोर मन वाला व्यक्ति यदि बनारस में भी मरे तो वह नर्क से नहीं बच सकता और प्रभु प्रेम में शांत हो चुका संत यदि माघार (जहाँ मरने पर माना जाता है कि व्यक्ति गधे की योनी में जन्म लेता है) में भी मरे तब भी वह अपने को तो मुक्त करता ही है। अतः उनका मानना था कि व्रत करने, स्नान करने या तीर्थों पर जाने से मुक्ति प्राप्त नहीं होती , अपितु मन को पवित्र करके ईश्वर की भक्ति

करने से मनुष्य जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होता है।

कबीर ने मुसलामानों को भी यही कहा कि हे व्यक्ति तू खुदा को खुश करने के लिए रोजा रखता है पर साथ ही साथ अपने स्वाद के लिए जीवों को मारता भी है। रोजा रखने, नमाज पढने या कलमा पढने से बहिश्त नहीं मिलता। खुदा का घर काबा तो ह्रदय के अन्दर ही है, परन्तु वह मिलता तब है, जब कोइ इस बात को मान ले -

रोजा धरै निवाज गुजारे कलमा भिसती न होई

सतरी काबा घट ही भीतरि जे करि जाने कोई 4

अत: कबीर ने हिन्दू और मुसलमान दोनों को ही कहा कि जप-ताप-व्रत-तीर्थ, रोजा, नमाज आदि करने का कोई लाभ नहीं, क्योंकि तुम्हारे मन में हिंसा और घृणा भरी है। अत: सर्वप्रथम तुम मन को पवित्र करो, क्योंकि सच्चे मन से ही प्रभु की भक्ति की जा सकती है।

निष्कर्ष

संत कबीर ने मध्ययुग में फ़ैल रही प्रत्येक बुराई पर अपने शब्दों से कड़ा प्रहार किया। समाज का कोइ भी क्षेत्र उनकी दृष्टी से अछूता न रहा। उन्होंने मनुष्य से कहा कि न तो कोई ऊँची जाति का होता है, न निम्न जाति का, न कोई हिन्दू है, न कोई मुसलमान। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए किये गए सभी बाह्य आडम्बर व्यर्थ हैं। उन्होंने शुद्ध आचरण, मन की पवित्रता और नाम स्मरण पर बल दिया। अच्छे कर्म करने की प्रेरणा वे सदा देते रहे। उनका उद्देश्य समाज में मानवधर्म स्थापित करना था और इसके लिए उन्होंने हर संभव प्रयत किये। कबीर सही मायनों में एक महान समाज सुधारक रहे। उनके द्वारा दिया गया ज्ञान अंत: ज्ञान था, स्वत; उदभूत ज्ञान था। अत: कबीर का कबीरत्व इसी में है कि उन्होंने जो कुछ भी अनुभव किया केवल वही कहा, उससे न कुछ अधिक न कुछ कम। इसीलिये उनके कथन में सत्य का बल है, वाणी का ओज है , भाषा की सरलता और सादगी है, जिन्दगी की सच्चाई है, वास्तविकता का आधार है, ह्रदय का पीडन है, भाव का उच्छलन है, ज्ञान का प्रकाश है, बौद्धिकता का विकास है, समाज का कल्याण है और जीवन का अमर सन्देश है, जिसने उसे पहचाना वह अमर हो गया, जिसने उसे जाना वह ज्ञानी हो गया, जिसने उसके रहस्य को समझा वह समझदार हो गया। जिसने वह

वह पंडित हो गया, जिसने उसे सुना वह निर्मल हो गया और जिसने उसे अपनाया वह तो कबीर ही हो गया।

## सन्दर्भ

1. डॉ वासुदेव सिंह, हिंदी संत काव्य : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ 216

2 गुरुग्रंथ साहिब, पृष्ट 483

3 वही, पृष्ठ 484

4 वही पृष्ट 480